आश्चर्य लोक में एलिस

लुईस कैरोल
नाट्य रूपान्तर : नीलेश रघुवंशी

आश्चर्य लोक में एलिस

(लुइस कैरोल की रचना "एलिस इन वण्डरलैण्ड")

नाट्य रूपान्तर

नीलेश रघुवंशी

आवरण एवं रेखांकन : रामबाबू

अनुराग ट्रस्ट

गीत

एक लड़की छोटी-छोटी सी
नाम है जिसका एलिस-एलिस
हवा में उड़ती-उड़ती
खुशबू में महकी-महकी
सात समन्दर पार जा पहुँची जंगल में
एक लड़की छोटी-छोटी सी...
कोई न जाने, न जाने कोई
एलिस को ना पहचाने कोई।
सबको जाने-पहचाने एलिस।

हँसी-ठिठोली करती
पहुँची ऐसे लोक में, आश्यर्च लोक में।
पल में छोटी, पल में बड़ी
कैसी अचरज की है बात।
अचरज की बात भैया बड़े अचरज की बात

एक लड़की छोटी सी...
जंगल में, घने जंगल में
बाग में, हरे बाग में
हवा में उड़ती फिरे-बौराई-बौराई।
एक लड़की छोटी सी...
एलिस! एलिस! एलिस!
एक लड़की छोटी-छोटी सी
नाम है जिसका एलिस-एलिस

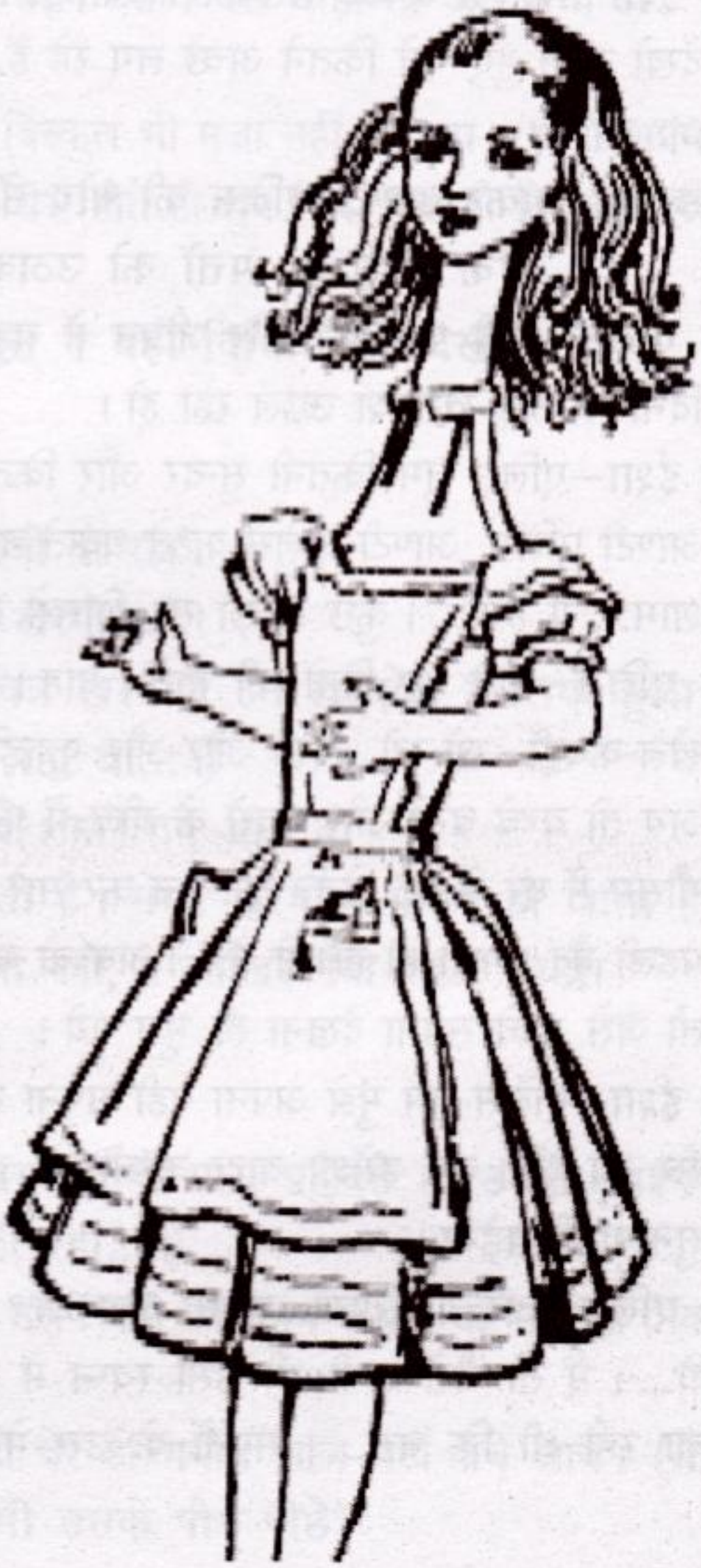

दृश्य–1

(दो बूढ़ी औरतें एक साथ बैठी हुई हैं। शाम का समय है। हवा चल रही है खूब तेज। पत्ते गिर रहे हैं। हवा पत्तों और अन्धड़ का मिला-जुला शोर। कुछ ही समय बाद जैसे बहुत तेज बारिश होगी...। बारिश के आसार। दोनों औरतें मौसम का भरपूर आनन्द ले रही हैं–खिड़की के बाहर का नजारा देखते हुए...। उन औरतों मे एक आण्टी एलिस है और दूसरी आण्टी ईशा।)

आण्टी ईशा–कितना अच्छा मौसम है। हवा भी कितनी तेज। लगता है बहुत तेज बारिश होगी। देखो उड़ते हुए पत्ते कितने अच्छे लग रहे हैं...। अरे रे रे यह पत्ते तो खिड़की से भीतर चले आ रहे हैं।

(कुछ पत्ते आकर आण्टी एलिस की गोद में आ गिरते हैं। आण्टी एलिस एकदम से चौंक जाती है। पत्तों को उठाकर छूती है–सहलाती है...।)

आण्टी एलिस–सूखे पत्तों का शोर जीवन में बहुत सुन्दर संगीत भरता है। जैसे नरम मुलायम दिनों में कोई खरगोश उछल रहा हो।

आण्टी ईशा–एलिस तुम कितनी सुन्दर और कितनी अच्छी बातें करती हो। इसीलिए सारे बच्चे आण्टी एलिस, आण्टी एलिस कहते थकते नहीं। चलो आज मुझे भी कुछ सुनाओ। जैसी यह शाम... ये हवा...। कुछ अच्छा सा, जिससे बीते हुए दिन वापस लौट आयें।

आण्टी एलिस–बीते हुए दिनों की बातें। वाह। वो स्वप्निल संसार–चिड़ियों से भरी शामें–वो खेल-कबड्डी–खो-खो, रस्सी और-और फुगड़ी साथ-साथ जैसे सारा संसार नाच उठता था। अब तो बच्चे बस्ते और बक्से के बीच में फँस गये जैसे। अब देखो न हम क्या इतने अच्छे मौसम में घर में बैठे होते? चुन-चुन कर सारे पत्ते गोद में भर रहे होते और बारिश-बारिश की पहली बूँद हमारी ही हथेली में...। अब वो बात कहाँ। जाने कहाँ बिला गया सब कुछ। अब तो जैसे बच्चे सपना देखना ही भूल गये।

आण्टी ईशा–एलिस तुम मुझे अपना वही सपना सुनाओ न। जिसमें तुमने एक अजब दुनिया की सैर की थी। तुम हमेशा वादा करती हो और मुकर जाती हो। आज तो तुम्हें वो सपना सुनाना ही पड़ेगा।

आण्टी एलिस–अरे वो सपना...सपना क्या था? सपनों के भीतर जाने कितने अनगिनत सपने थे...। मैं तो जैसे अभी भी उसी स्वप्न में हूँ। मैं बावली गिरती-पड़ती ऐसे लोक में चली जा रही थी कि बस...। सपनों के उस मेले में जैसे खो गयी थी मैं...।

दृश्य–2

(एक हरे भरे कस्बे के बाहर एक लड़की खेल रही है। असल में वह कोई नया खेल ढूँढ़ रही है। उस लड़की की उम्र सात या आठ साल है। नाम है उसका एलिस।

एलिस के साथ उसकी बड़ी बहन भी है। एलिस की बहन को किताब पढ़ने का शौक है। वह यहाँ खेल के मैदान में भी अपने साथ किताब लायी है। लेकिन एलिस चाहती है कि जीजी उसके साथ खेले। इसलिए एलिस जीजी को तंग कर रही है...। जिद कर रही है...।)

जीजी–एलिस परेशान मत कर। जरा भी नहीं पढ़ने देती। बस थोड़ी-सी और बची है... नहीं तो शाम हो जायेगी।

एलिस–ऊँह.. हूँ! ये क्या पढ़ रही हो तुम भी। बिल्कुल भी मजा नहीं आ रहा। चलों अपन खेलते हैं। नहीं तो शाम चली आयेगी। और...अँधेरा होते ही तुम फिर कहोगी कि चल एलिस-घर चलें।

(इसी के साथ अचानक एलिस ने बड़ी विचित्र बात देखी।)

एलिस–अरे रे रे रे, वो गया। वे गया...।

जीजी–क्या, क्या गया?

एलिस–खरगोश! वो जा रहा है। वो देखो, जीजी वो रहा।

जीजी–अरे! पढ़ने दे एलिस। यहाँ तो बहुत से खरगोश हैं।

(मगर एलिस देखती है कि वह बड़ा विचित्र खरगोश है। खरगोश घबराया हुआ सा कहता जा रहा था...।)

खरगोश–हाय। हाय। बहुत... बहुत देर हो गयी। मारे गये आज तो।

(एलिस खरगोश के पीछे लपककर जाती है। मगर खरगोश गायब हो जाता है)

एलिस–देखूँ कहाँ गया? इधर भी नहीं, उधर भी नहीं, ये आखिर गया कहाँ? बेचारा!

जीजी–ऐलिस। उधर कहाँ जा रही हो?

एलिस–बस। अभी आयी, जीजी।

(एलिस खरगोश के पीछे भाग जाती है। खरगोश के पास पहुँचते ही उसके आश्चर्य की सीमा नहीं रही...।)

एलिस–अरे खरगोश, और जैकेट पहने हुए। और उसमें घड़ी की चेन। वाओ। यह तो घड़ी निकालकर टाइम भी देख रहा है।

खरगोश–**(टाइम देखते हुए)** हाय, हाय। बड़ी देर हो गयी। आज नहीं बचे जान। **(तेजी से अपने बिल में घुस जाता है–एलिस भी उसके पीछे-पीछे)**

एलिस—देखूँ तो मैं भी कहाँ गया?

(वहाँ बड़ा अँधेरा रहता है। सुरंग चली गयी थी सीधी जमीन के नीचे। जैसे कोई सीधा कुएँ में गिरे—एलिस गिरती ही चली जाती है—गिरते-गिरते चीखती है।)

एलिस—हाय, इतना गहरा। ओह! कितनी दूर चली आयी मैं। अब तो मैं जमीन के अन्दर, बीचों-बीच हूँगी। यह होगा कोई... चार-पाँच हजार मील तो जरूर होगा।

(एलिस अब और भी तेजी से गिरती चली जाती है।)

एलिस—मैं कहीं धरती के उस पार तो नहीं निकल जाऊँगी।

(तब निकलूँगी कहाँ, किस जगह? मुझे तो उस देश का नाम भी नहीं मालूम। एलिस धम्म से पुआल पर गिरती है। वह डर जाती है—लेकिन उसे चोट नहीं आती। एलिस की निगाह एक घड़े पर जाती है। सुन्दर चमचमाता हुआ घड़ा।)

एलिस—अरे ये क्या चमक रहा है। और कितना सुन्दर चमचमाता घड़ा। कैसी प्यारी गन्ध है इसकी। कहीं यह वही घड़ा तो नहीं जो दादी अपने साथ लेकर आयी थीं। दादी जब घड़े के बारे में बताती हैं तो कैसी सुन्दर हो उठती हैं। एकदम लाल गुलाल।

इसे उठाकर देखती हूँ। लेकिन मम्मी तो मना करती हैं। कहती हैं भारी सामान नहीं उठाना चाहिए। फिर भी... उठाकर देखती हूँ। काम वाली बाई भी तो रोज घड़े उठाती है। कहती है घड़े उठा-उठाकर ही तो वह छोटी रह गयी...। घड़े को सिर पर रखे कैसी ठुमक-ठुमक कर चलती है!

(एलिस घड़े को उठाकर सिर पर रखती है—बहुत कोशिशों के बाद वह ठीक से घड़ा रख पाती है।)

एलिस—अब चलती हूँ मैं भी ठुमक-ठुमककर। हुई..ई..ई..ई..। मैं तो सचमुच बहुत छोटी हो रही हूँ। एक नन्हीं-मुन्नी सी गुड़िया सी। अरे..रे..रे.. कहीं छोटी होते-होते मोमबत्ती न बन जाऊँ।

(दौड़ी-दौड़ी दरवाजे तक जाती है)

एलिस—अरे। दरवाजा तो बन्द है। और चाभी कहाँ? ऊई माँ, चाभी तो वहीं मेज पर छूट गयी। और मैं इतनी छोटी हो गई हूँ कि चाभी तक पहुँच ही नहीं सकती।

(एलिस सिसकियाँ भर-भरकर रोने लगती है उसे अपनी मम्मी की याद आती है तो और भी जोर से रोती है। रोते-रोते उसकी नजर एक कोने में जाती है)

एलिस—अरे! यह कोने में क्या लटक रहा है। ...साँप....साँप... साँप। ओह मर जाऊँगी मैं तो...। नहीं नहीं साँप नहीं है यह। देखूँ तो है क्या यह?

(पास जाकर देखती है....)

एलिस—ओह, हो। डर ही गयी थी मैं तो। वो भी रस्सी से...। आज जी भरकर रस्सी कूदूँगी। इतना कूदूँगी, इतना कूदूँगी कि बस। कुछ भी तो नहीं हो रहा—मम्मी बेवजह चिल्लाती है एलिस थक जाओगी—बस भी करो अब। वाह क्या मजा आ रहा है जैसे मैं हवा में हूँ। अब तो मैं रोज रस्सी कूदा करूँगी।

एलिस—वो वो, वो जा रहा है, खरगोश। लो वो तो गया भी।

(एलिस आँखों पर हाथ मलते हुए चारों ओर देखती है। एक बड़ा-सा हॉल है—मगर बन्द। बहुत सारे दरवाजे लेकिन सब बन्द। एलिस को बहुत आश्चर्य होता है। हाल के बीचों-बीच एक बहुत बड़ी शीशे की मेज रखी हुई है।)

एलिस—ओह। यह रही चाभी। शीशे की मेज पर कैसी चमक रही है। वाह!

(एलिस एक-एक कर सारे दरवाजों में चाभी लगाती है। लेकिन कोई दरवाजा नहीं खुलता। फिर उसे एक कोने में बहुत ही छोटा-सा दरवाजा दिखता है। वह उसे खोलती है।)

एलिस—यह तो खुल गया। छोटे से दरवाजे की कितनी बड़ी चाभी।

(दरवाजा खुलते ही एलिस बहुत खुश होती है। दरवाजे में से झाँककर देखती है तो मारे खुशी के पागल-सी हो जाती है। चारों ओर घूमती है...।)

एलिस—कितना सुन्दर, कितना अच्छा बाग है। कैसा हरा-भरा। कैसे रंग-बिरंगे फूल चमक रहे हैं—और उस पर छायी ओस की बूँदें। जी चाहता है जाकर चूम लूँ। **(लेकिन एलिस तुरन्त निराश हो जाती है..)**

एलिस—हाय, इसमें तो मेरा सिर अड़ा जाता है। अब क्या करूँ? काश। मैं नन्हीं-मुन्नी गुड़िया होती.. तो पलक झपकते ही उस पार...।

दृश्य 3

रस्सी कूदने के थोड़ी देर बाद एलिस को बहुत अचम्भा होता है—

एलिस—यह क्या हो रहा है। मेरा सिर कहाँ पहुँचा जा रहा है। अरे मेरी गर्दन तो एक फुट की हुई जा रही है। और मेरा सर तो छत से टकरा रहा है। ये लो मैं तो पूरी छत के बराबर हो गयी। और... और यह चाभी? **(अपनी इस स्थिति पर एलिस को रोना आ जाता है)**

(रोते-रोते एलिस का ध्यान किसी के पैरों की आवाज पर जाता है। चौंककर देखती है—वही खरगोश।)

खरगोश—हाय, इतनी देर हो गयी। अब तो मलिका महारानी मुझे जिन्दा नहीं छोड़ेगी। हाय, हाय मारा गया मैं तो।

एलिस—क्या करूँ? इसी से मदद माँगती हूँ। अरे! इसके एक हाथ में पंखा है और एक में दस्ताने। देखिये महानुभाव! जरा मेहरबानी करके मुझे...।

(सुनते ही खरगोश भाग जाता है। मारे घबराहट के पंखा और दस्ताने वहीं छोड़ जाता है। एलिस दस्ताने उठा लेती है।)

एलिस—ये दस्ताने कैसे नन्हे-नन्हे से हैं। यह पूरा दस्ताना तो मेरी एक उँगली में आ जायेगा। और यह रंगीन पंखा कैसा हल्का है, जैसे चिड़िया का पर...।

ये हो क्या रहा है—कल तक तो सब ठीक-ठाक था। मैं एलिस ही हूँ या कोई और? ऐं, कुछ भी तो समझ नहीं आ रहा। **(अजीब उलझन में पड़कर एलिस फिर रोने लगती है)** रोते-रोते उसने देखा कि दस्ताने उसके पूरे हाथ में आ गये।

एलिस—अरे-ये दस्ताने तो बहुत छोटे थे। ये मेरे हाथ में कैसे आ गये? ओ हो। यह पंखे की कारस्तानी है। हो न हो यही बात है। अब चलूँ बाग में... बाहर फूलों के बीच। कैसी छोटी हो गयी हूँ मैं। **(हुर्रे-हुर्रे, मारे खुशी के एलिस नाच उठती है)**

एलिस—अर्र...र्..र्..। यह क्या? मैं तो फिसल ही गयी।

(एलिस एकदम पानी में गिर पड़ी)

एलिस—अरे यह तो कोई नदी का किनारा आ गया। नहीं, नहीं इसका पानी तो समुद्र सा खारा-खारा है। ...अरे नहीं...। यहीं बैठकर तो अभी मैं रोयी थी। तो क्या आँसुओं से नदी बन गयी? उई मम्मी। और यह दुम किसकी है इसमें। छिः। अरे, ये भैंसे तो नहीं हैं? नहीं... नहीं। अरे ये तो चूहा है...बड़ा-सा..।

ओ चूहे जी... अजी ओ चूहे जी। सुनते ही नहीं।

ओ भाई साहब—आपने मेरी बिल्ली को देखा है?

(चूहा हड़बड़ाकर पानी में उछलने लगता है।)

एलिस—अरे बस, बस। मुझे मालूम नहीं था कि आपको बिल्लियाँ पसन्द हैं। लेकिन अगर आप मेरी दीना बिल्ली का देखेंगे तो बस देखते ही रह जाएँगे। बहुत ही प्यारी और सुन्दर है। मेरी दीना।

(मुलायम-मुलायम गोद में बैठकर म्याऊँ-म्याऊँ करती है—और चूहों को पकड़ने में ऐसी उस्ताद है कि बस....। सुनते ही चूहा और जोर से उछलने लगता है...)

एलिस—भई सॉरी, सॉरी, रियली सॉरी। सच मैं भूल गयी थी। डरिये मत जोर से मत उछलिये, पानी आ रहा है मेरे ऊपर। अब कुत्ते बिल्लियों की बात नहीं करूँगी। चलो, चलो अपन तैरकर उस तरफ चलते हैं।

(चूहे को ढाँढ़स बँधता है—वह एलिस की तरफ आता है...)

एलिस—देखो। यह बत्तख महाराज हैं। और वो डोडो बत्तख। वह लोरी तोता—वह रही कोयल, ओर भी बहुत से लोग हैं। चलो अपन भी चलते हैं। देखो, देखते ही देखते कितने दोस्त मिल गए।

(तैरते-तैरते एलिस सामान्य कद में आ जाती है)

दृश्य 4

(सारे जानवर और परिन्दे खारे पानी की बाढ़ से किसी तरह किनारे लगे। सबके सब पानी में तरबतर हैं। सब शोर कर रहे हैं। इनके साथ एलिस भी है। वह अपना फ्राक निचोड़ रही है। हवा बहुत तेज है—सब ठिठुर रहे हैं।)

एलिस—हाय, कैसी ठण्ड है। सबको जुकाम होगा अब। कितनी बुरी तरह काँप रही हूँ मैं। लोरी तोते... अपनी आँख तो खोलो।

तोता—क्या टर्र-टर्र लगायी है। चुप नहीं रह सकती क्या? नाम भी ठीक से बोलना नहीं आता। मैं लोरी टोटा हूँ। लोरी टोटा। और ठीक से बात कर। मैं तुझसे बड़ा हूँ।

एलिस—मैं पूरे सात साल की हूँ। समझे। अपनी उमर बताओ। तब मानूँगी। चले हैं धमकाने। भीग गये तो रोने लगे...।

(सारे लोग तोते को चिढ़ाते हैं।)

लोरी तोता—हटो सब हटो। लोरी टोटा बड़ा है, बहुत बड़ा।

एलिस—ऐसे नहीं। उमर बताओ।

(सारे लोग मजे ले रहे हैं—तोता गुस्सा हो जाता है।)

तोता—टाँय-टाँय-टाँय। तुम सब बच्चे हो। लोरी तोता अपनी उमर नहीं बताता। लोरी तोता बुड्ढा, बहुत-बहुत बुड्ढा। **(सब हँसते हैं, शोर बढ़ जाता है)**

(चूहा भीड़ से निकलकर आता है।)

चूहा—चुप हो जाओ। चुप हो जाओ। मेरी बात सुनो।

एलिस—बुड्ढे तोते, ओ बुड्ढे तोते चुप भी हो जा अब। चूहे जी बोल रहे हैं।

चूहा—तुम सब ठण्ड से काँप रहे हो। मैं भी काँप रहा हूँ। हमें कोई बहुत ही सूखी....एकदम रूखी-सूखी, खुश्क दवा चाहिए... जो हमें सुखा दे।

(सब फिर शोर करते हैं... बीच में बोलने की कोशिश करते हैं। चूहा फिर सबको चुप रहने के लिए कहता है।)

एलिस—हाँ, जो हमें एकदम सुखा दे। पूरा का पूरा।

चूहा—हाँ, ऐसी ही दवा है। सुनते ही सबके सब एकदम सूख जाओगे। अच्छा सुनो। जो मैंने कभी नहीं सुना, वही सुनाता हूँ, तुम सबको। सुनो..।

गीत—...एक राजा था। उसकी तीन बेटियाँ थीं। तीनों बेटियाँ राजा को खूब प्यार करती थीं। एक दिन अचानक राजा को सूझा कि...

(तोता बीच में ऊँ-ऊँह करता है।)

चूहा—(गुस्से में) आपने कुछ कहा?

तोता—नहीं। नहीं तो।

एलिस—झूठा कहीं का।

चूहा—राजा को सूझा कि मेरी बेटियों में सबसे ज्यादा प्यार कौन-सी करती होगी, राजा ने बहुत दिमाग लड़ाया कि शायद बड़ी बेटी बहुत प्यार करती होगी या बीच वाली या कि छोटी वाली।

बत्तख—क्या नम्बर गिनाये जा रहे हो। आगे बोलो।

चूहा—वही तो बताने जा रहा हूँ।

बत्तख—हाँ। चलिये सुनाइये जल्दी से...।

चूहा—राजा ने तीनों बेटियों को बुलाकर पूछा—कैसा लगता हूँ मैं तुम्हें....।

बड़ी बेटी ने कहा—शक्कर की तरह।

दूसरी बेटी ने कहा—रस मलाई की तरह।

(राजा बहुत खुश हुआ।)

तीसरी बेटी ने कहा—नमक की तरह।

(राजा बहुत गुस्सा होता है—उसे वह देश निकाला दे देता है। बहुत... बहुत बाद में जाकर राजा को मालूम पड़ता है, नमक का मोल। तब राजा बहुत दुखी होता है। छोटी बेटी को ढूँढ़ने निकलता है लेकिन वह नहीं मिलती।

दुख और पश्चाताप में राजा के प्राण चले जाते हैं।

हाँ तो भई बताओ, क्या हाल है? तुम बोलो नन्हीं एलिस, अब कैसा लग रहा है तुम्हें। सूख गयी कि नहीं...।)

एलिस—कहाँ। बिल्कुल वैसी ही तो हूँ।

तोता—(पर दिखाता हुआ) न हम सूखे।

सुनिए। बहुत हो गया। मेरी सुनिए। अब हम सब लोग मिलकर "घोड़ा जमाल शाही, पीछे देखा मार खायी" खेलते हैं।

एलिस—लेकिन हम घोड़ा कहाँ से लायेंगे...?

डोडो—जब हम खेलेंगे तब अपने आप आ जायेगा। देखो। जमीन पर यह बड़ा-सा गोल घेरा बना रहा हूँ। सब लोग इसी लाइन पर दौड़ेंगे।

(सब के सब दौड़ते हैं। खुशनुमाँ मस्ती भरा माहौल) खेल गीत—घोड़ा जमाल शाही....)

(धमाचौकड़ी मचाते। सब दौड़ रहे हैं। साथ में एक दूसरे पर फब्तियाँ भी कसते जाते हैं)

एलिस—देखो। तोता वैसे कितना स्मार्ट बनता है। अभी देखो दुम कैसी लिथड़ रही है।

बन्दर—बत्तखें कैसीं। इतना इतराकर बैठीं हैं। कैसी ताक झाँक करती हैं।

डोडो—बन्दर जी। यह क्या उछलकूद मचा रहे हो। सीधे बैठो।

एलिस—आहा। हम तो भई खूब गरम हो गए। चूहे जी की भी दुम सूख गयी अब तो।

तोता—देखो-देखो। मेरा लाल रंग देखो। कैसा निखर आया।

डोडो—दौड़ खत्म। दौड़ खत्म।

सब पूछते हैं—कौन जीता? कौन जीता?

डोडो—सब जीते। सबको इनाम मिलेगा। और हाँ—इनाम, अरे इनाम। यह लड़की बाँटेगी। यही हमारी नन्हीं-सी लड़की...।

(एलिस परेशान होती है। इनाम कहाँ से लाऊँ? फिर उसे याद आता है—जेब से चाकलेट का पैकेट निकालती है। खुश होती है।)

एलिस—ये रहा। अरे ये तो वैसा का वैसा ही बन्द है। खारा पानी इसके भीतर नहीं पहुँचा।

(एलिस सबको इनाम में चाकलेट देती है। सब उसे धन्यवाद देते हैं। सब.... एलिस रानी हिप-हिप-हुर्रे, हिप-हिप-हुर्रे।)

चूहा—अब जरा चुप हो जाओ। सबको इनाम मिल गया। एलिस को तो मिला ही नहीं। क्यों डोडो जी?

डोडो—हाँ-हाँ। क्यों नहीं। एलिस रानी तुम्हारी जेब में और क्या-क्या है? देखो तो जरा...।

एलिस—कुछ नहीं, बस एक छल्ला है।

डोडो—यहाँ लाओ। मुझे दो।

(एलिस डोडो को छल्ला देती है। सब ध्यान से एलिस और डोडो को देखते हैं)

डोडो—हम सबकी ओर से कृपया यह छोटी-सी भेंट स्वीकार करें एलिस जी।

एलिस—धन्यवाद।

(सब खुश होकर चाकलेट खाते हैं)

तोता—अच्छा। कोई कहानी सुनाए।

एलिस—चूहे जी। आप सुनाइये अपना किस्सा। हाँ, लेकिन यह बताइये आप कि कु. और बि.

समझ गये न।

(धीरे से कान में कहती है : कु. यानी कुत्ता और बि. यानी बिल्ली।)

चूहा—भला क्या मेरा किस्सा और क्या मेरे किस्से की दुम। मेरा किस्सा बड़ा दुखभरा और लम्बा है।

एलिस—दुख भरा! दुख भरा क्यों?

(चूहा एलिस की बात पर ध्यान नहीं देता। किस्सा शुरू करता है कि बीच में एलिस उसे टोकती है...)

एलिस—चलो... मैं अपनी बिल्ली की कहानी सुनाती हूँ। मेरी बिल्ली दीना पूसी। बहुत-ही सुन्दर भूरे रंग की। मेरी सबसे प्यारी सहेली।

जब वह म्याऊँ-म्याऊँ करती हुई मेरी गोद में आकर बैठती है तो मैं मारे खशी के नाच उठती हूँ। नाचते-नाचते दीना मेरे गले में हाथ डाल देती है और मारे डर के आँखें बन्द कर लेती है।

तोता—अच्छा एलिस मुझे घर जाना है। चलता हूँ।

डोडो—ओह। मैं भी चलता हूँ। घर पर बच्चे अकेले हैं।

सब—अच्छा एलिस टा...टा..। बहुत रात हो गयी कल मिलेंगे।

(एक-एक कर सब चल जाते हैं। सन्नाटा छा जाता है। एलिस अकेली रह जाती है।)

एलिस—हाय, मैंने क्यों बैठे-बिठाये मुसीबत मोल ले ली। जाने क्यों, कोई भी उसका नाम सुनना पसन्द नहीं करता। मेरी प्यारी पूसी।

कितनी भली और नेक है। जाने कहाँ होगी अभी? कौन जाने दूध पिया भी कि नहीं। मुझे तुम्हारी आँखें, चमकती हुई आँखें बहुत याद आती हैं। जाने कब मिलेंगे हम...। **(एलिस सिसकियाँ भर-भरकर रोती है।)** चलो उस बाग को ढूँढ़ती हूँ।

(रोते-रोते उसे किसी के पैरों की आवाज सुनायी देती है।)

एलिस—ऐं। कौन है?

(पास आने पर देखती है कि वही सफेद खरगोश है, घबराया हुआ सा....।
एलिस आँखें मलकर खड़ी हो जाती है)

दृश्य 5

(थोड़ी देर में खरगोश भटकता हुआ आ निकला। एलिस ने उसे तुरन्त पहचान लिया—वही, घबराया हुआ, कुछ ढूँढ़ता सा—जाना पहचाना। एलिस ने मन ही मन सोचा—

एलिस—बेचारा जाने क्या ढूँढ़ रहा है?

खरगोश—कहाँ गिर गया। यहीं से तो निकला था मैं। यहाँ तो कहीं नहीं दिख रहे? कहाँ जाकर ढूँढूँ? क्या होगा—अब मेरा। कहाँ जाऊँ—क्या करूँ मैं!

(एलिस खरगोश को परेशान सा कुछ ढूँढ़ते हुए देखती रहती है। एलिस को याद आता है कि वह वही दस्ताने और पंखा खोज रहा है। एलिस को चिन्ता हो गयी। वह सोचने लगी कि—)

एलिस—आखिर पंखा और दस्ताने कहाँ छूट गये?

अब किधर होगा वह हॉल वाला घर?

(इसी बीच खरगोश को एलिस दिख जाती है। उसे देखते ही खरगोश कड़ककर पूछता है)

खरगोश—कौन है उधर? ये क्या खटर-पटर लगा रखी है। मेरीएन तुम एक मिनट भी शान्त नहीं बैठती। जाओ भागकर जल्दी से मेरे दस्ताने और पंखा लेती आओ। फौरन जाओ....।

(एलिस खरगोश से इतनी डर जाती है कि जल्दी से भाग जाती है। खरगोश ने उसे पहचानने में गलती की, वह उसे अपनी नौकरानी मेरीएन समझ रहा था। मन ही मन एलिस ने कहा—"खरगोश बच्चू, बहुत होशियार समझते हो अपने आपको। मैं तुम्हारी नौकरानी नहीं—एलिस हूँ एलिस! (सब कुछ के बाद एलिस दौड़ती हुई एक छोटे से घर के पास पहुँच गयी। घर पर एक तख्ती लगी हुई थी—एस. खरगोश।)

एलिस—ओहो मिस्टर खरगोश साहब। क्या कहने! (एलिस बिना दरवाजा खटखटाये ही भीतर घुस जाती है। उसे डर था कि कहीं असली मेरीएन मिल गयी तो...। अन्दर एक छोटे से खूबसूरत कमरे में दस्तानों के कई जोड़े और पंखा रखा हुआ था। एलिस आश्चर्यचकित रह गयी। प्रसन्नता से चारों ओर घूम गयी। घूमते-घूमते उसकी नजर चमकती हुई चीज पर पड़ी।)

(दरवाजे पर खटखट होती है। एलिस चौंक जाती है। हाय—दरवाजे पर कौन है?)

(खरगोश बाहर से चिल्लाता है...)

खरगोश—मेरीएन, ओ मेरीएन की बच्ची, क्या कर रही हो? जल्दी करो, दस्ताने लाओ—देर हो रही है मुझे।**(दरवाजे पर धक्का-मुक्की करता है।)** "यह दरवाजा आज खुलता क्यों नहीं," सफेद खरगोश भुनभुनाता है। "और ये मेरीएन कहाँ मर गयी। कोई बोलता क्यों नहीं। जाऊँ खिड़की की तरफ से देखूँ।" एलिस को उसके पैरों की आवाज से मालूम हो गया कि वह खिड़की वाले हाथ के नीचे पहुँच गया। "अच्छा देखूँ" उसने सोचा, "मेरे हाथ में आता है कि नहीं।" उसे छूने के लिए एलिस ने अपना हाथ हिलाया। सफेद खरगोश एकदम से चीख उठा—"हुई-ई। यह क्या बला है" और लड़खड़ाकर पीछे की ओर नाजुक फूलों के काँचघर के ऊपर जा गिरा। काँच के फ्रेम टूट गये और वह उनमें फँस गया।

(एलिस को बड़ी खुशी हुई।)

एलिस—खूब गिरा। मजा आ गया, चला था हीरो बनने। बहुत रौब झाड़ रहा था। हूँ.. हूँ...।

(खरगोश ने चिल्ला-चिल्लाकर नौकरों और पड़ोसियों को इकट्ठा कर लिया। खरगोश का हाल देखकर सब घबरा गए।)

खरगोश—तुम लोग देखो—जरा ये तो बताओ, खिड़की में से क्या हिल रहा है? अरे माली! कहाँ गया तू?

एक—**(घबराकर)** हुजूर, यह तो पंजा है। किसी आदमी का पंजा है।,

खरगोश—आदमी का पंजा। अबे पागल इतना बड़ा आदमी का पंजा होता है कहीं। पूरी खिड़की के बराबर।

दो—चाहे जो हो, है आदमी का पंजा ही।

एलिस—**(एलिस सबकी बातें सुन रही थी।)** बोली—आओ। आओ! और नजदीक आओ! देखूँ, क्या-क्या करते हैं। कैसे बेवकूफ हैं सबके-सब। जरा भी अक्ल नहीं। इन्हें सूझ ही नहीं रहा कि छत ऊपर से हटा दें। **(सब लोग खुसर-फुसर करते हैं।)** ये कुछ और करें इसके पहले भागूँ यहाँ से....।

(एलिस ने देखा कि कई तरह के जीव-जन्तु इकट्ठे खड़े हुए हैं। उन सबने उसे घेरना चाहा। लेकिन वह सबको चकमा देकर भागी। भागते-भागते एलिस एक जंगल में जा पहुँची। थोड़ी खुली हवा पाकर वह रुक गयी और गुनगुनाते हुए इधर-उधर घूमने लगती है। घूमते-घूमते एलिस ने सोचा कि सबसे पहले मुझे अपने साधारण कद में आ जाना चाहिए। और फिर उस खूबसूरत बगीचे में टहलने चलना चाहिए। अचानक उसे किसी के भौंकने की आवाज सुनायी दी। उसने झाड़ियों के बीच में झाँककर देखा। वहाँ कुत्ते का एक बड़ा सा पिल्ला गुर्रा रहा था। एलिस को लगा कि पिल्ला उसके साथ खेलना चाह रहा है। उसने एक लकड़ी उठाकर उसके आगे की। मगर वह इतने जोर से भौंका कि एलिस सहमकर पीछे हट गयी—यह लकड़ी को हड्डी समझ रहा है। एलिस ने फिर उसे तू..तू... तू... तू... कहा। पिल्ला और भी जोर से भौंकने लगा।)

एलिस—उई! माँ... ये तो सर पर ही आ गया। कैसे बड़े-बड़े दाँत हैं। झबरा कहीं का। अगर इसने झपट्टा मार दिया तो—भागूँ यहाँ से। **(भागते-भागते एलिस काफी दूर निकल गयी। थोड़ी देर में वह थक गयी। उसे जोर से भूख लग रही थी। आस-पास घास-फूस—फूल-पत्तियों के अलावा कुछ भी नहीं था। वह जहाँ खड़ी थी—वहाँ एक कुकुरमुत्ता उगा हुआ था। कुकुरमुत्ते की लम्बाई एलिस के बराबर ही थी। एलिस को रोना-सा आ जाता है कि उसकी और कुकुरमुत्ते की लम्बाई एक ही है। उसने आस-पास देखा वहाँ उसे कुछ खास नजर नहीं जा रहा था। उसने सोचा कि देखा तो**

जाये कि इसके ऊपर क्या है? उसने पंजे के बल उचककर ऊपर देखा तो उसकी आँखें एक बड़े भारी झिनगे से जा मिलीं। झिनगा बड़े आराम से कुकुरमुत्ते पर हाथ बाँधे बैठा था। वह हुक्का पीने में इतना मगन था कि उसे एलिस दिखी ही नहीं।)

दृश्य 6

(थोड़ी देर तक रेशम का कीड़ा (झिनगा) और एलिस एक-दूसरे को देखते रहे। रेशम का कीड़ा हुक्के का कश लेकर बड़े इत्मीनान से बोला—कौन?)

एलिस—(अचकचाते हुए) पता नहीं क्या हूँ मैं। सुबह से अब तक इतनी बार बदल चुकी हूँ कि क्या बताऊँ!"

रेशम कीड़ा—(बुजुर्गों की तरह) क्या मतलब?

एलिस—मुझे खुद समझ नहीं आ रहा तो तुम्हें क्या बताऊँ। जो मैं थी—वह मैं अब नहीं हूँ।

रेशम कीड़ा—मुझे तुम्हारी बातें बिल्कुल पल्ले नहीं पड़ रहीं।

एलिस—मुझे खुद कुछ नहीं सूझ रहा? सुबह से इतनी बार छोटी-बड़ी हो चुकी हूँ कि दिमाग में सब

कुछ गड़बड़ा रहा है। जाले लग गये हैं दिमाग में।

रेशम कीड़ा—इसमें गड़बड़ क्या है? कुछ भी तो अजूबा नहीं।

एलिस—ऐसे नहीं समझेंगे आप। कभी आप तारा बन जायें—कभी तितली और कभी मधुमक्खी। तब समझ आयेगा बच्चू।

रेशम कीड़ा—तब भी कुछ नहीं होगा। मजे ही आयेंगे।

एलिस—बड़ी मुसीबत है। कहाँ इस झक्की से पाला पड़ गया। मुझे कोई बात नहीं करनी। मैं तो चली।

रेशम कीड़ा—लौट आओ। सुनो! मुझे तुमसे एक जरूरी बात करनी है।

एलिस—क्या?

रेशम कीड़ा—तो तुम्हें लगता है कि तुम बदल गयी हो।

एलिस—हाँ, मुझे अब कुछ याद नहीं आता। मेरी अपनी प्यारी कविता भी—

एक सहेली सो रही थी?
धूप में बैठी रो रही थी
उसका साथी कोई नहीं...
चलो सहेली मुँह धो लो
हमको पकड़कर ढूँढ़ लो।

मछली जल की रानी है
जीवन उसका पानी है
हाथ लगाओ डर जाती है
बाहर निकालो मर जाती है

इसके बाद क्या होता है? मुझे कुछ याद भी नहीं आ रहा।

एलिस—जिंगल-जिंगल लिटिल स्टार

रेशम कीड़ा—यह कविता किताब में तो ऐसी नहीं है
कुछ भी तो बोल रही हो तुम।

एलिस—एकाध शब्द इधर-उधर हो गया होगा।

रेशम कीड़ा—नहीं-नहीं पूरी गलत है। एकदम गलत है। **(कुछ देर बाद)** तुम कैसी रहना चाहती हो। किस रूप में।

एलिस—बात यह है कि बार-बार छोटी-बड़ी होना अच्छा नहीं लगता।

रेशम कीड़ा—नहीं। मैं कुछ नहीं जानता-मानता।

एलिस—असल में थोड़ी सी लम्बी होना चाहती हूँ। देखिये साढ़े तीन इंच भी कोई कद है।

रेशम कीड़ा—मुझे देखो। मैं तो इतना ही हूँ। **(थोड़ा रुककर)** ये लो **(एक लकड़ी की वस्तु देता है)** इसका एक किनारा लम्बा कर देगा एक छोटा।

एलिस—किसका सर। किसका? प्लीज...

रेशम कीड़ा—कुकुरमुत्ते का।

एलिस—लेकिन कुकुरमुत्ता तो गोल है। एक काम करती हूँ। तोड़ लेती हूँ इसे... अभी ठीक किये लेती हूँ अपनी लम्बाई। मगर धीरे-धीरे।

(धीरे-धीरे एलिस अपने असली कद में आ जाती है। अब हो गयी मैं फिर एलिस।)

एलिस—अब मुझे बाग ढूँढ़ निकालना चाहिए। सुन्दर-सुन्दर फूलों वाला बाग। तितलियाँ मँड़राती रहती हैं जहाँ। फूल कितने अपने लगते हैं। वह जैसे मुझसे दोस्ती करना चाहते हैं।

(एलिस चारों ओर नजर घुमाती है। उसे एक छोटा-सा मकान दिखता है। भला उस मकान के भीतर कौन होगा। चलकर देखा जाए। लेकिन मैं तो लम्बी हूँ—और मकान छोटा। क्या किया जाए। आइडिया। एक बार फिर से मकान के जैसी छोटी होकर देखती हूँ—फिर से छोटी हो जाती है।

दृश्य 7

(एलिस थोड़ी देर तक उस मकान को देखती हुए सोचती रही कि अब क्या किया जाए। इसी बीज एक शानदान वर्दी पहने एक आदमी दौड़ता हुआ आया। उसकी शक्ल मछली जैसी थी। आदमी ने आकर जोर से दरवाजा खटखटाया। अन्दर से एक दूसरा आदमी निकला। उसका चेहरा गोल और आँखें बड़ी-बड़ी थीं। वह देखने में बिल्कुल मेढ़क जैसा था। उन्हें देखकर एलिस आश्चर्यचकित रह गयी। उनकी बातें सुनने के लिए धीरे-धीरे चुपके से उनके पास जा पहुँची। मछली सी शक्ल वाले आदमी के हाथ में उसी के जैसा बड़ा भारी लिफाफा सा था। लिफाफा देते हुए वह गम्भीर स्वर में बोला—)

मच्छीराम—सलाम दादू! यह लो। यह बेगम के लिए है। मलिका ने उन्हें खेल में आने के लिए न्यौता भेजा है।

मेंढकी दादू—न्यौता! वो भी मलिका महारानी का। अच्छा! अच्छा! दे दूँगा। और तब तो ठीक-ठाक चल रहा है न? **'अच्छा'** कहते हुए दोनों एक दूसरे का झुककर अभिवादन करते हैं।

(अभिवादन करते हुए दोनों की नाक एक दूसरे से टकरा जाती है। यह देखते हुए एलिस

को जोर से हँसी आ जाती है। वह हँसी रोकना चाहती है। लेकिन हँसी रुकती ही नहीं।

एलिस—कैसी मजे की बात है। हा..हा..। भागूँ यहाँ से नहीं तो मुझे हँसता हुआ देख लेंगे।

(हँसती हुई बहुत दूर चली जाती है। पेड़ों की आड़ में जाकर खड़ी हो उसने देखा कि मच्छीराम जिस रास्ते आया था, उसी रास्ते से वापस चला गया। एलिस फिर लौट आयी। आकर उसने देखा कि दादू अभी तक दरवाजे पर बैठा हुआ आँखें फाड़े आसमान की तरफ एकटक देख रहा है।)

एलिस—(स्वतः कैसे आँखें फाड़कर आसमान देख रहा है। यह भी कोई तरीका हुआ आसमान देखने का।) मुझे आगे जाना है—रास्ता बताइये।

(दादू रास्ता दिखाता है।)

दृश्य 8

(खुले आँगन में आकर एलिस को ऐसा लगा, जैसे वहाँ किसी की दावत का इन्तजाम हो। बीच में एक मेज रखी थी और चारों ओर बहुत कुर्सियाँ, और प्लेट-प्याले। मगर वहाँ बैठे थे सिर्फ तीन ही लोग—एक हैट टोपी बेचने वाला। उसके सर पर एक बड़ा ऊँचा सा हैट था। उसी पर उसके दाम भी लिखे हुए थे। दूसरे मोटे मूस/चूहा। और तीसरे सफेद खरगोश खुद।

(एलिस को दूर से देखते ही मोटा चूहा और हैट टोपी बेचने वाला दोनों चिल्लाए—)

चूहा—यहाँ और मेहमानों की जगह नहीं है। बिल्कुल भी जगह नहीं।

हैटवाला—एकदम हाउसफुल है।

एलिस—क्यों, सारी मेज तो खाली पड़ी हुई हैं। तीन ही जन तो हैं यहाँ।

तीनों—नहीं! नहीं! नहीं! हाउसफुल, फिर भी हाउसफुल।

(एलिस अनसुनी करते हुए पास ही की एक सीट पर जाकर बैठ जाती है)

चूहा—कैसे अजब लोग हैं। बिन बुलाये चले आते हैं।

खरगोश—तिस पर बैठते भी कैसे ठसक से हैं।

हैटवाला—अच्छा बताओ—नारियल का पेड़ और सुपारी का पेड़ दोनों एक से क्यों हैं? या, यह बताओ मछली की आँख के सपने मछुआरे की आँखों में क्यों दिखायी देते हैं?

एलिस—चलो अच्छा है। पहेलियाँ बूझते हैं।

खरगोश—तुम्हें लगता है कि तुम बता दोगी? क्यों दोनों एक से हैं?

एलिस—बूझ लूँगी तो जरूर बता दूँगी।

हैटवाला—जो बूझ लोगी तो कैसे बता दोगी? क्या बूझना और बताना एक ही बात है। कुछ देर

बाद तुम कहोगी कि जो देख लूँगी, वह खा लूँगी। और जो खा लूँगी वह देख लूँगी। क्या, ये सारी बातें एक ही बात है?

खरगोश—फिर कहोगी जो मुझे अच्छा लगेगा वह मैं ले लूँगी। जो मैं ले लूँगी, वह मुझे अच्छा लगेगा। क्या यह भी एक ही बात है?

(मोटा चूहा नींद में झूल रहा था। अचानक वह भी बोल पड़ा।)

चूहा—फिर तुम कहोगी कि मैं सोऊँगी तो साँस लूँगी, और साँस लूँगी तो सोऊँगी। क्या यह भी एक ही बात है?

(एलिस पहेली का जवाब सोचती रही। वह मन ही मन दोहराती है—मछली की आँख के सपने मछुआरे की आँखों में क्यों दिखते हैं?)

हैटवाला—आज दिन कौन-सा है? **(कहकर जेब से घड़ी निकालता है, कान के पास ले जाकर गौर से देखता है। एलिस को बड़ा अजीब लगता है।)**

एलिस—आप घड़ी को कान से लगाकर क्यों देख रहे हैं। दिन तो मेरे ख्याल से आज शनिवार है। कैसी अनोखी घड़ी है। दिन बताती है—समय नहीं बताती।

हैटवाला—तुमने पहेली बूझ ली।

एलिस—नहीं आप ही बताइए।

हैटवाला—तुमने पहेली नहीं बूझी। कोई बात नहीं। इसके एवज में कोई गीत सुनाओ।

एलिस—"एनू-कुनू कहाँ गये थे
बन्दर की डलिया में सो रहे थे।
बन्दर ने चिकोटी काटी—रो रहे थे।
बन्दर ने गुड़ दिया
ही-ही हँस रहे थे।"

खरगोश—ऊहूँ—कोई कहानी सुनाओ।

एलिस—मुझे तो कोई कहानी नहीं आती। सच कह रही हूँ।

हैटवाला—तब फिर मोटा चूहा कहानी सुनायेगा। उठ मोटू उठ। कहकर चिकोटी काटता है।

खरगोश—हाँ-हाँ। कोई अच्छी सी कहानी सुनाओ।

मोटा चूहा—बहुत पुरानी बात है। जब तीन सगी बहनें रहती थीं। उनके नाम थे—बबली, टबली, लवली। वे एक कुएँ के अन्दर, बिल्कुल उसके अन्दर रहती थीं।

एलिस—वे वहाँ खाती क्या थीं?

मोटा चूहा—वे वहाँ गुड़ खाती थीं।

एलिस—ये कैसे हो सकता है। हो ही नहीं सकता वरना वे बीमार पड़ जातीं।

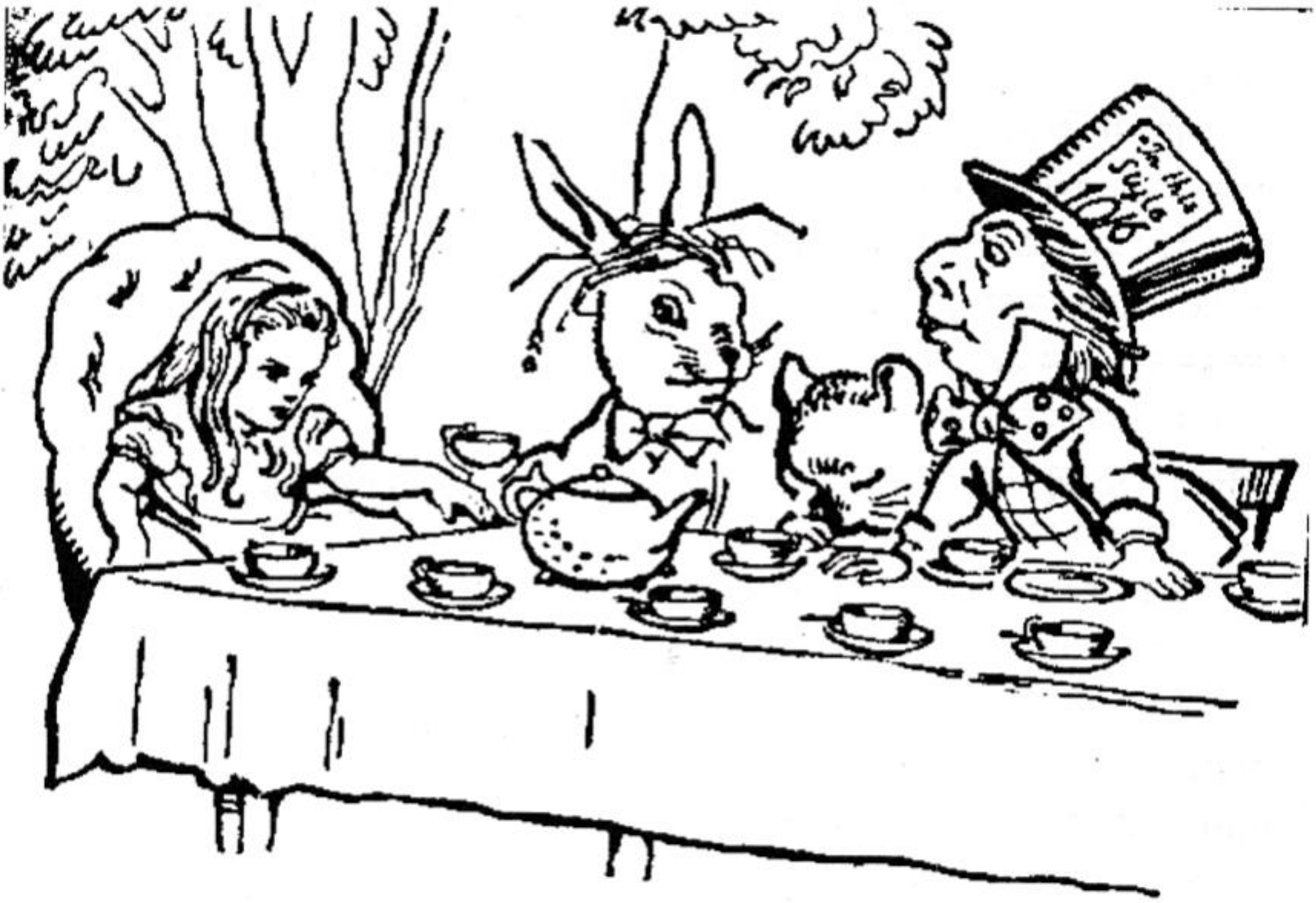

चूहा—बीमार तो वे पड़ ही गयी थीं—बहुत ही बीमार।
एलिस—फिर वे बाहर क्यों नहीं आयीं?
खरगोश—एलिस जी! थोड़ी सी चाय और ले लीजिये।
एलिस—थोड़ी सी! मैंने चाय पी कहाँ अभी?

चूहे जी, आप तो यह बताइये कि वे तीनों बहनें कुएँ के भीतर क्यों रहती थीं।

चूहा—क्योंकि वह गुड़ का कुआँ था।
एलिस—(चिढ़कर) कहीं गुड़ का भी कुआँ होता है।
खरगोश—हिश्श्श्श.....।

(चूहा भी बुरा मान जाता है)

चूहा—तुमसे चुपचाप कहानी सुनते नहीं बनता। अगर ऐसा ही है तो खुद ही पूरी कर लो।
एलिस—नहीं! नहीं! आप कहिए। अब नहीं टोकूँगी।
चूहा—ये तीनों लड़कियाँ कुछ खींचना चाहती थीं।
एलिस—क्या खींचना?
चूहा—गुड़ और क्या तुम्हारा सिर।
हैटवाला—मुझे एक प्याला चाहिए। हम लोग जरा एक-एक सीट आगे बढ़ लें।

(सब लोग बढ़ते जाते हैं)

एलिस—एक बात मेरे पल्ले नहीं पड़ रही। वे गुड़ कहाँ से खींचती थीं?
हैटवाला—जैसे कुएँ से पानी खींचते हैं वैसे ही। और कैसे? बुद्धू कहीं की।
एलिस—लेकिन वे तो कुएँ के भीतर थीं। बिल्कुल तह में। खैर अच्छा....
मोटा चूहा—हाँ तो वे खींचना सीख रही थी। तरह-तरह की चीजें। जिनके नाम अ से शुरू होते हैं।
एलिस—क्यों 'अ' से ही क्यों?

(खरगोश भी साथ देता है।)

(इस बीच चूहे को झपकी लग जाती है।)

हैटवाला—अबे उठ। फिर सो गया। मोटू कहीं का।
चूहा—जैसे आम, आलू, अनार। अनार का रस।
एलिस—तुमने अनार का रस खींचते हुए देखा है कभी?
हैटवाला—नहीं मालूम तो बीच में क्यों बोलती हो? चुपचाप बैठकर सुनो।

(एलिस खीझ से भर जाती है। गुस्से में प्याले वगैरह एक तरफ सरकाकर उठ जाती है।)

एलिस—बहुत झेल चुकी मैं। मेरे सब्र का बाँध टूटने वाला है। बाज आयी तुम लोगों से।

(जाते-जाते एलिस पीछे मुड़कर देखती है तो उसे बहुत आश्चर्य होता है। खरगोश और हैटवाले ने

मिलकर चूहे की गर्दन केतली में डाल दी थी। एलिस को हँसी भी आती है और चूहे पर दया भी)

एलिस—कुछ भी हो, मेरी बला से। ऐसी पार्टी में तो कभी भूलकर भी नहीं जाऊँगी।

(एलिस यूँ ही घूमती-घूमती चली जा रही थी कि उसने एक बड़ा भारी पेड़ देखा। उसके पास आकर उसे और भी अचम्भा हुआ, क्योंकि उसमें किवाड़ लगे हुए थे। एलिस जरा-सा धक्का देकर झाँकती है। फिर अन्दर चली जाती है वहाँ उसने अपने आपको उसी हाल के अन्दर पाया जहाँ शीशे वाली मेज थी। उसे उसने फौरन पहचान लिया।

वहाँ छोटा सा दरवाजा भी उसे दिखता है जिसके पार वही लुभावना बाग था, जिसको देखने के लिए वह लालायित थी। बाग में जाने के लिए एलिस को अपनी लम्बाई कम करनी थी। वह तुरन्त कुकुरमुत्ते का एक टुकड़ा खाकर छोटी-सी हो जाती है। अब एलिस बाग में थी।)

दृश्य 9

एलिस ने बाग में देखा कि तरह-तरह के फूल खिले हुए हैं, रंगों की जैसे नुमाइश हो। और उनके बीच में फौव्वारा। एलिस मारे खुशी के नाच उठी। उसने कुछ लोगों को खुसुर-फुसुर करते सुना। आगे जाकर देखा तो हैरान रह गयी। गुलाब के पौधों के नीचे कुछ ताश के पत्ते से खड़े थे। कोई सत्ता था, कोई पंजा, कोई तिग्गी। वे सबके सब जल्दी-जल्दी सफेद गुलाब के फूलों को लाल रंग से रंग रहे थे। वह उनकी बातें सुनती है—

दुग्गी—देख मेरे ऊपर रंग मत छिड़क।

पंजा—अरे यार, सत्ते ने कुहनी मार दी। मैं क्या करूँ?

सत्ता—हाँ-हाँ! सारी टोपी मेरे ही सर रख दो।

पंजा—देख! मेरा मुँह मत खुलवा। याद है? तू इसी काबिल है कि तेरी गर्दन उड़ा दी जाये।

सत्ता—देख! अगर अभी मैं कुछ कहूँगा तो बस!

दुग्गी—रुको। अभी तुम दोनों की पोल खोलता हूँ। गधे कहीं के। मिट्टी और खाद में अन्तर नहीं जानते?

एलिस—अरे भाई। यह बताओ, तुम इन सफेद गुलाबों को लाल रंग से क्यों रंगे जा रहे हो?

(आपस में खुसुर-फुसुर करते हैं)

दुग्गी—मिस साहिबा, बात यह है कि हमसे कहा गया था लगाने को लाल गुलाब, हम लगा गये सफेद! अब मलिका महारानी देखेंगी तो हमारी खैर नहीं।

(इसी समय गाजे-बाजे की आवाज एलिस के कानों में पड़ी, जैसे कोई जुलूस आ रहा हो।)

पंजा—अरे वह देखो, वह देखो मलिका महारानी की सवारी आ रही है। सब जल्दी-जल्दी औंधे लेट जाओ। सबके सब औंधे होकर रास्ते के दोनों तरफ लेट जाते हैं।

(जुलूस नजदीक आता जाता है)

एलिस—बेचारे! यह भी कोई कायदा है। न बाबा, मैं तो नहीं पड़ती औंधी। अच्छी तरह देखूँगी जुलूस।

(अब जुलूस बिल्कुल सामने से गुजरता है। आगे-आगे बैण्ड बजता है। उसके पीछे खूबसूरत वर्दी में बिरादरी बालम आयी। इसके पीछे दरबारी लोग और अमीर-उमरा। सब बड़े जगर-मगर कपड़े पहने हुए हैं। साथ में छोटे-छोटे बच्चे चमकते हुए रंग-बिरंगे कपड़े पहने, हँसते-कूदते चलते जा रहे हैं। फिर नवाब और राजे-महराजे। उनकी दबी हुई हँसी, खाँसने और गुपचुप बात करने का ढंग एलिस को बड़ा अजीब लगता है। साथ-साथ उनकी बेगमें और रानियाँ। सबके सब सर पर ताज पहने रहते हैं। इतने हीरे-जवाहरात देख एलिस की आँखे चौंध जाती हैं। इन सबके बीच में वह सफेद खरगोश भी एलिस को दिखता है। खरगोश बड़ी हड़बड़ी में घबराया हुआ-सा लोगों से बातें करता रहता है। पीछे-पीछे एक भीड़ जय-जयकार करती है। 'मलिका महारानी की जय! बादशाह सलामत की जय!')

एलिस—**(मन ही मन)** मलिका महारानी का गुरूर तो देखो। जैसे सचमुच की विक्टोरिया हों। या इन्दिरा गाँधी।

मलिका—गुलाम, यह कौन लड़की हमारे रास्ते में खड़ी है।

गुलाम—हुजूर सलामत, कुछ पता नहीं।

मलिका—बेवकूफ!

(एलिस से पूछती है) बच्ची तुम्हारा नाम क्या है?

एलिस—हुजूर, पान की मलिका, मेरा नाम एलिस है। **(खुद से)** अरे इनसे क्या डरना। एक फूँक मारूँ तो सारे के सारे पत्ते उड़ जाएँ। हाँ नहीं तो!

मलिका—और ये औंधे मुँह कौन लोग पड़े हुए हैं।

एलिस—मुझे क्या मालूम। यह मेरा काम नहीं है।

मलिका—**(तैश में)** यह गुस्ताखी हमारी शान में नादान लड़की! ले जाओ इसको... उड़ा दो इसका सर।

एलिस—क्या वाहियात बात है!

बादशाह—प्यारी मलिका, जरा ख्याल तो करो। अभी बच्ची ही तो है।

मलिका—आप कहते हैं तो..। गुलाम जरा देखो कौन हैं ये लोग?

गुलाम—**(तीनों को सीधा करते हुये)** हुजूर मलिका सलामत! दुग्गी, पंजा सत्ता।

(तीनों मलिका को सलाम करते हैं—)

हुजूर मलिका महारानी का इकबाल रहे!

हुजूर बादशाह सलामत का इकबाल रहें।

हुजूर पान के गुलाम साहब बने रहे!

हुजूर, मिस साहब, हुजूर....।

मलिका—बस! बन्द करो बकवास! असल बात पर आओ।

तीनों—हुजूर जान बख्शी हो। गलती हुई। ये गुलाब के फूल...

मलिका—अच्छा हम समझ गए। कामचोर कहीं के। ले जाओ, उड़ा दो इनके सर।

(तीनों जोर-जोर से चिल्लाते हैं। रोते हैं। माफी माँगते हैं)

एलिस—देखो वे सिपाही आ रहे हैं। जल्दी से इधर इन गमलों के अन्दर छिप जाओ। बस! ऊपर से ये पत्ते भी डाल लो। गुलाम आकर तीनों को ढूँढ़ते हैं। पर वे नहीं मिलते।

मलिका—सर उड़ा दिये उनके?

गुलाम—हुजूर के इकबाल से तीनों उड़ गये।

मलिका—अच्छा! अच्छा! एलिस तुम्हें चुडूगुडू खेलना आता है?

एलिस—चुडूगुडू...!

मलिका—हाँ, हडूडू...!

एलिस—हडूडू...!

(मालिका खेलकर बताती है... मैदान में)

एलिस—ओ-हो। कबड्डी।

मलिका—चलो-चलो। आज हमारे साथ भी खेलो

(मलिका और एलिस खेल की तरफ बढ़ती हैं)

मलिका—सब लोग तैयार हो जाओ।

(कबड्डी खेल शुरू होता है।)

दृश्य 10

मलिका—एलिस.....। चलो आज तुम्हें एक महाकच्छ दिखाते हैं।

एलिस—चलिए। चलते हैं।

मलिका—यह एक बहुत ही बड़ा भारी कछुआ है। वह देखो।

एलिस—वो जो धूप में सो रहा है। बड़े-बड़े पंख और बड़ी-सी चोंच।

मलिका—हाँ। वही। वह है—ग्रिफिन।

(दोनों बातें करती हुई थोड़ी देर में उसके पास पहुँच जाती हैं। उनको देखकर वह उठकर खड़ा हो जाता है।)

ग्रिफिन—हुजूर पान की मलिका....और...!

मलिका—ये हमारी मेहमान हैं। एलिस। जाओ इन्हें महाकच्छ से मिलाओ। ये उनकी कहानी सुनेंगी और नाच भी देखेंगी।

ग्रिफिन—जो हुक्म। मलिका महारानी!

मालिका—अच्छा एलिस! मिलेंगे बाद में।

एलिस—जी। धन्यवाद।

(मलिका चली जाती है। ग्रिफिन और एलिस साथ-साथ चलते हैं। कुछ देर चलने पर एलिस को ऐसा लगता है, जैसे हवाएँ रो रहीं हों, और कोई बड़ी जोर-जोर से आहें भर रहा हो।)

ग्रिफिन—यह उसी महाकच्छ की आवाज है।

एलिस—कोई बहुत बड़ा दुख है उसे। कौन जाने। क्या दुख?

ग्रिफिन—नहीं, ऐसा कुछ नहीं। भ्रम में रहता है वह।

एलिस—क्या वही है जो उस चट्टान पर झुका हुआ गुमसुम बैठा है?

ग्रिफिन—हाँ। वही है वह।

सुनिए! महाराज, यह आपका इतिहास सुनने बड़ी दूर से आयी हैं।

महाकच्छ—**(गहरी साँस छोड़ते हुए)** अच्छा! अच्छा! अभी सुनाता हूँ। बैठ जाओ तुम लोग।

(एक गहरी साँस लेकर फिर चुप हो जाता है। फिर बोलता है।)

महाकच्छ—हो, बहुत दिन की बात है, जब मैं असली कछुआ था। **(कहकर फिर चुप हो जाता है।)**

एलिस—**(ग्रिफिन के कान में)** इतिहास पूरा हो गया?

महाकच्छ—जब हम बच्चे थे, तो समुन्दर के अन्दर स्कूल जाया करते थे। तुम्हें शायद विश्वास न होगा।

एलिस—मैंने कब कहा कि विश्वास नहीं हो रहा?

महाकच्छ—**(डाँटते हुए)** कहा!

ग्रिफिन—बको मत! बस!

महाकाच्छ—दुनिया में, पूरी दुनिया में, हमारे स्कूल जैसा अच्छा कोई स्कूल नहीं हो सकता। हम रोज स्कूल जाते थे। रोज।

एलिस—रोज तो मैं भी जाती हूँ। इसमें नयी बात कौन-सी है।

महाकच्छ—कौन-कौन से विषय पढ़ती हो? अतिरिक्त विषय।

एलिस—फ्रेंच और संगीत

महाकच्छ—और धुलाई?

एलिस—**(उपेक्षा से)** नहीं धुलाई-उलाई नहीं।

महाकच्छ—फिर तो तुम्हारा स्कूल बिल्कुल अच्छा नहीं है। हमारे स्कूल में तो फ्रेंच और संगीत के

साथ-साथ धुलाई भी सिखायी जाती थी। आयी बात समझ में—प्यारी बच्ची।

एलिस—धुलाई सीखने की जरूरत क्यों पड़ी। समुन्दर के भीतर जो रहते हो।

महाकच्छ—तो क्या हुआ? इसके साथ और भी विषय थे मेरे पास।

एलिस—कितने घण्टे रोज पढ़ना पड़ता था?

महाकच्छ—पहले दिन नौ घण्टे। दूसरे दिन आठ, तीसरे दिन सात। इसी तरह से रोज।

एलिस—कैसी अजीब बात है।

(अचानक उसे ख्याल आता है कि इस तरह तो एक क्लास की पूरी पढ़ाई दस दिन में ही खत्म हो जाती होगी। उत्साह और खुशी से झूमते हुए।)

बस! तब ग्यारहवें दिन छुट्टी?

महाकच्छ—हाँ! बस और क्या?

एलिस—फिर बारहवें दिन?

ग्रिफिन—किर्रर.. बस बहुत हुआ। अब कुछ अपने खेल-कूद के बारे में बताओ।

दृश्य 11

(महाकच्छ ने एक गहरी आह भरी। फिर अपनी आँखें बन्द कर ली। कुछ देर तक एलिस को देखता है, फिर कुछ बोलने की कोशिश करते हुए...)

महाकच्छ—ओह! तुम्हें तो समुन्दर के नीचे रहने का मौका बहुत कम मिला होगा।

एलिस—मैं कभी नहीं रही समुन्दर के अन्दर।

महाकच्छ—फिर तो झींगे से भी मुलाकात नहीं हुई होगी?

एलिस—झींगे का तो मैंने...

(मन-ही-मन—अचार खूब खाया है—फिर जोर से)

कभी दर्शन नहीं किया।

महाकच्छ—फिर तुम क्या जानो "झींगा कुदान" नाच का आनन्द।

एलिस—नहीं जानती। सचमुच नहीं जानती। कैसा होता है ये नाच?

ग्रिफिन—**(उत्साह से)** पहले समुन्दर के किनारे एक लाईन में खड़े हो जाओ।

महाकच्छ—दो लाइन में। सील मछली, कछुए वगैरह की अलग लाइन। और जैसे ही रास्ते की जेली मछलियाँ साफ हो जायें।

ग्रिफिन—उसमें जरा देर लगती है।

महाकच्छ—तब दो कदम आगे।

ग्रिफिन—बगल में एक-एक झींगा दबाये।
महाकच्छ—इसी तरह दो बार आगे झींगों समेत।
ग्रिफिन—फिर पीछे लौटा जाये।
महाकच्छ—और फिर वे भींगे।
ग्रिफिन—**(चीखते हुए)** फेंक दो।
महाकच्छ—दूर समुन्दर में। जितनी दूर हो सके।
ग्रिफिन—**(खुशी में)** और तैर जाओ उसके पीछे।
महाकच्छ—कलाबाजी खाते हुए।
ग्रिफिन—अब झींगे दूसरी तरफ कर लो।
महाकच्छ—और फिर वापस, जहाँ से चले थे।

यह नाच का पहला चक्कर, समझ गयी?

एलिस—हाँ यह तो बड़ा अच्छा नाच है।
महाकच्छ—देखना चाहोगी।
एलिस—हाँ-हाँ। जरूर।
महाकच्छ—बस। एक ही चक्कर नाचेंगे हम। क्यों ग्रिफिन। मगर साथ में गायेगा कौन, तुम या मैं।
ग्रिफिन—अरे! तुम ही गाओ। मुझे याद नहीं ठीक से।

(महाकच्छ गाता है। एलिस और ग्रिफिन नाचते हैं।)

गीत—

"बड़ी सफेदा मछली बोली, प्यारे घोंघा आओ।
पीछे-पीछे नाकू आता, जल्दी कदम बढ़ाओ।
आओ, आओ, चले भी आओ, चले भी आओ साथ।
मत घबराओ, चले भी आओ, चले भी आओ साथ।
लहरें हमको दूर उछालें, आगे ही ले जायें।
लहरों में आनन्द बड़ा है, आओ नाचे गायें।
घोंघा बोला—दूर बहुत है सागर पार किनारा।
मेरा दिल तो धुक-धुक करता दूर पड़ेगा जाना।
नहीं जाऊँगा—नहीं जाऊँगा, नहीं जाऊँगा साथ
मत घबराओ, मेरे घोंघे, चले भी आओ साथ।

एलिस—यह तो बड़ा ही अच्छा नाच रहा। और गीत तो मुझे बहुत ही अच्छा लगा। कितना अनोखा! कैसा प्यारा!

महाकच्छ—अब तुम अपनी कहानी सुनाओ।

एलिस—अरे मेरी मत सुनो। मुझे और मेरे दिमाग को जाने क्या हो गया है। कभी मैं बहुत बड़ी हो जाती हूँ और कभी बहुत छोटी—बहुत ही छोटी, और जाती कहीं हूँ—पहुँच कहीं जाती हूँ। कहना कुछ चाहती हूँ—निकलता कुछ और ही मेरे मुँह से। सारे पाठ, कविताएँ, हिसाब-किताब सब उल्टे-पुल्टे हो गये हैं। अच्छी भली कविताएँ गड़बड़ हो गयी हैं...।

ग्रिफिन—ऊँह! यह भ्रम है तुम्हारा। ऐसा कुछ नहीं हुआ।

एलिस—नहीं। सच।

महाकच्छ—सुनाओ कुछ।

ग्रिफिन—अच्छा सुनाओ तो जरा-कौवे ले गये पान।

एलिस—ओह! मेरा तो सिर चकरा रहा है। यहाँ भी जैसे मैं क्लास में आ गयी।

महाकच्छ—याद नहीं क्या? जल्दी सुनाओ। जल्दी। एकदम।

एलिस गाना शुरू करती है—

एनू-कुनू की दुकान
कौवे ले गये बीड़ी पान।
एनू हैरान-परेशान-क्या करे-क्या न करे-
आये ढेर ग्राहक माँगे बीड़ी-पान
कुनू भैया—कुनू भैया
कौवे ले गये बीड़ी पान, सारे के सारे पान।
क्या कहूँ ग्राहकों से—कहते-कहते रोये एनू।
बोले कुनू—चिन्ता न करो। करो न चिन्ता।
आता हूँ हवाई जहाज लेकर
खैर नहीं अब तो कौवे की
एनू कुनू की दुकान...।
छत पर बैठा कौवा हँसे—
आसमान में उड़ते हवाई जहाज
को देख-देखकर

ग्रिफिन—यह क्या उल्टा-पुल्टा सुना दिया।

महाकच्छ—हाँ। यह वो कविता थोड़े ही है।

ग्रिफिन—वो सुनाओ। जाती थी मैं नदी के किनारे?

एलिस—जाती थी मैं नदी किनारे एक आँख मींचे-मींचे

देखा मछली और मछुआरिन कूद रही रस्सी...।

महाकच्छ—बस,बस, बस। क्या फायदा सब ऊटपटाँग। किताब में ऐसा नहीं है।

ग्रिफिन—मत पूछो बेचारी से। हाँ, बस। क्यों मिस एलिस कोई और गीत सुनोगी?

एलिस—गीत?

(महाकच्छ—एक गहरी साँस छोड़कर कहता है)

सुनो...।

"बड़े मजे का सूप हरा—
बड़े मजे का सूप।
हरा-हरा, गरमा-गरम भरा-धरा।
शाम सुनहरी, पीली गहरी
भरी शाम का सूप धरा।
बड़े मजे का सूप।"

ग्रिफिन—वाह! वाह! वाह। किर्रर....।

(इसी बीच हल्ला सुनायी देता है। कोई जोर से एलान करता है—"मुकदमा शुरू हो गया।" ग्रिफिन एकदम से एलिस का हाथ पकड़ता है—और कहता है—)

ग्रिफिन—बस एलिस, अब छोड़ो इस गीत को। चलो, चलकर मुकदमा देखें। वहाँ बड़े-बड़े गुल खिलने वाले हैं।

एलिस—चलो-चलो।

दृश्य 12

(अदालत के सामने एलिस ने बड़ी भीड़ देखी। तरह-तरह के पंछी-पखेरू और छोटे-मोटे पशु-जीव अपने-अपने ढंग से मुकदमे में अपनी दिलचस्पी लेते हुए। एलिस ने सफेद खरगोश और हैटवाले को दूर से ही पहचान लिया। बादशाह के पास ही सफेद खरगोश खड़ा है। उसके एक हाथ में बिगुल और दूसरे में गोल लपटा हुआ कोई लम्बा कागज।....बादशाह ही जज बना हुआ है। लोग फुसफुसाकर धीरे-धीरे बातें कर रहे हैं।)

सिपाही—**(जोर से डण्डा हिलाते हुए)** शोर न मचाओ। यह अदालत है। मुकदमा शुरू होने वाला है।

ग्रिफिन—एलिस, वह देखो पान का गुलाम। हथकड़ी—बेड़ी पड़ी हुई है।

एलिस—कैसा उदास है। अरे देखो, पान का बादशाह ही तो जज बना हुआ है। उसके ताज के

नीचे विग तो देखो।

ग्रिफिन—और पान की मलिका। कैसी जली-भुनी बैठी है। एकदम गरम तवा। चाहो तो रोटी सेंक सकती हो।

एलिस—और वह सफेद खरगोश... कैसा बुजुर्ग बना खड़ा है। एक हाथ में सरकारी कागज—दूसरे में नन्हा-सा बिगुल।

(एकाएक एलिस को बड़ी अच्छी सी महक आती है। देखती है कि टेबिल पर मिठाइयाँ रखी हुई हैं।)

एलिस—फैसला सुनाने के बाद सबको बँटेंगी क्या? कितना अच्छा हो? मेरे तो मुँह में पानी आ रहा है।

ग्रिफिन—किर्रर-किर्रर। चिन्ता मत करो। सबसे पहले तुम्हें ही मिलेंगी।

एलिस—हट! खाने-पीने के मामले में मुझे मजाक अच्छा नहीं लगता।

(कई छोटे मोटे जानवर स्लेटें रखे हुए हैं उन पर स्लेट की पेंसिलें चलाते। एलिस को बड़ा आश्चर्य होता है।)

एलिस—ये मंच है। ये जो स्लेट पेंसिल लिए बैठे हैं। सबके सब कैसे गम्भीर बने बैठे हैं। यह गिलहरी और ये रहा मेंढ़क। और वो उधर दुम खड़ी किये छिपकली। अरे, डोडो भी तो है। और वह रहा रट्टू तोता। लेकिन ये सबके सब लिख क्या रहे हैं?

ग्रिफिन—अपने-अपने नाम। कहीं मुकदमें में भूल न जायें।

एलिस—**(थोड़ा सा ओट में)** कैसे बुद्धू और मूर्ख हैं।

सफेद खरगोश—खामोश! खामोश! खामोश! यह अदालत है। **(स्लेटों पर पेंसिल के चलते की आवाज थोड़ी तेज हो जाती है। एलिस स्लेट देखती है। तो उसे बहुत आश्चर्य होता है।)**

एलिस—अरे ये तो वही लिख रहे हैं जो अभी-अभी मैंने कहा था। कितने गधे हैं सब के सब। बुद्धू की स्पेलिंग लिखनी भी नहीं आती। एलिस पलक झपकते ही छिपकली की पेंसिल खींच लेती है।

छिपकली—**(चिल्लाते हुए)** हाय! मेरी पेंसिल। कहाँ गयी? अभी तो मेरे पास थी। मेज के नीचे भी नहीं है। तुम्हारे पास तो नहीं है डोडो भाई।

डोडो—चल हट, मेरे पास नहीं है। बड़ी आयी...। **(सफेद खरगोश जोर से बिगुल बजाता है—तीन बार, फिर चिल्लाकर कहता है)**

खामोश!

बादशाह—मुकदमा पेश किया जाये। मुजरिम को हाजिर करो।

(अपने हाथ में लिये कागज को खरगोश जोर-जोर से पढ़ता है।)

एक दिन भरी दोपहर में
पान की बेगम थीं लहर में
मसाला मँगाया सस्ता
कचौड़ी बनायी खस्ता
पान का गुलाम उचक्का
देखता रहा भौचक्का
नजर बचाकर चुरायी कचौड़ी
मची है। तभी से भागा दौड़ी

बादशाह—पंचों। अब सुनाओ अपना फैसला।

(सफेद खरगोश धीरे से कान में समझाता है अभी नहीं। बहुत सी कार्यवाही बची हैं अभी।)

बादशाह—अच्छा! अच्छा! तो पहला गवाह कौन है?

हाजिर करो उसको।

(सफेद खरगोश तीन बार बिगुल बजाता है फिर जोर से कहता है—पहला गवाह—हैटवाला हाजिर हो।)

(हैटवाला बहुत घबराया हुआ सा, अपना वही टोप सर पर रखे हुए है। उसके हाथ में अभी भी प्याला है और दूसरे में आधा खाया टोस्ट।)

एलिस—**(फुसफुसाते हुए)** देखो! पीछे-पीछे सफेद खरगोश भी चला आ रहा है, मोटे चूहे के साथ। टी-पार्टी में इन्होंने मुझे बहुत रुलाया था। अब मजा आयेगा बच्चू को। बड़ा हैटवाला बना फिरता है।

हैटवाला—हुजूर, माफी चाहता हूँ। मैंने चाय खत्म ही नहीं की थी कि एकाएक मेरी पुकार हो गयी।

बादशाह—तुम्हें चाय खत्म करके आना चाहिये था। चाय पीने कब बैठे थे?

हैटवाला—शायद अप्रैल की चौदह तारीख।

सफेद खरगोश—पन्द्रह

मोटा चूहा—सोलह

बादशाह—पंचों। सब लिख लिया जाय। और यह टोप सर से उतारो।

हैटवाला—हुजूर, यह मेरा नहीं है।

बादशाह—चोरी का है? पंचों लिख लो कि...

हैटवाला—नहीं, सरकार—यह तो मैं बैचने के लिये सर पर रखता हूँ। कीमत लिखी हुए है इस पर। हुजूर मेरा अपना कोई हैट नहीं है, मैं तो हैट-टोपी बेचनेवाला हूँ माई-बाप।

ग्रिफिन—देखो, पान की मलिका ऐनक लगाकर कैसे देख रही है?

बादशाह—अपना बयान दो ठीक-ठाक। नहीं तो यहीं तुम्हारी गरदन नापी जायेगी। याद रक्खो।

(ये सब सुनकर हैटवाला और घबरा जाता है। उसके लिये खड़ा होना मुश्किल हो जाता है। मारे घबराहट के टोस्ट की जगह प्याला ही काट लेता है। इसी बीच एलिस को कुछ गड़बड़ सा लगता है—उसे लगा कि वह फिर से बढ़ रही है। सोचती है कि अदालत से बाहर चली जाऊँ—फिर उसे लगता है कि अदालत में तो काफी जगह है—वह वहीं बैठी रहती है)

(अचानक एलिस को लगता है कि कोई उसे दबा रहा है। वह झल्ला जाती है)

एलिस—अरे ये कौन है, भरी अदालत में अंगड़ाई ले रहा है। अच्छा, मोटे चूहे साहब हैं। सो रहे थे।

मोटा चूहा—एलिस। तुम तो मुझे दबाये चली जा रही हो।

एलिस—मैं? मैं शायद बढ़ रही हूँ। क्या करूँ मोटू?

मोटा चूहा—ऐ! मोटू मत कहो और तुम यहाँ बढ़ कैसे रही हो? यह अदालत का कमरा है।

एलिस—वाह-वाह। क्या कहने? तुम तो जैसे बढ़ते ही नहीं।

मोटा चूहा—बढ़ते हैं तो ढंग से बढ़ते हैं तुम्हारी तरह मजाक नहीं करते। बढ़ो तुम, जितना चाहो उतना फैलो। मैं तो जाता हूँ अदालत के दूसरी तरफ बैठने...

मलिका—रुको जरा यह लिस्ट **(सूची)** तो लाओ जिनमें उन गवैयों का नाम है, जिन्होंने पिछली बार गाना गाया था।

(सुनते ही हैटवाला और भी जोर से काँपने लगता है।)

बादशाह—काँपने और घबराने से काम नहीं चलेगा। सीधे-सीधे बयान दो। नहीं तो...

हैटवाला—सरकार! मैं एक गरीब आदमी हूँ। मैंने चाय भी शुरू नहीं की थी। कोई हफ्ता दस दिन हुआ होगा, हुजूर, जबसे मक्खन और टोस्ट भी पतला होने लगा हुजूर, जबसे जबसे ही चाय की टिप टिप...।

बादशाह—**(हैटवाले से)** सुनो! अगर तुम्हें और कुछ नहीं कहना है तो बैठ जाओ।

हैटवाला—हुजूर! मैं तो कब से पड़ा गिड़गिड़ा रहा हूँ।

बादशाह—तो तुम उठ जाओ।

(अदालत में फिर कोई खिलखिलाकर हँस पड़ता है। पहले की तरह सिपाही उसे कसकर बोरे में बन्द कर देते हैं। एलिस देखती रहती है...)

हैटवाला—अब जरा शान्ति से एक घूँट चाय पी लूँ। भगवान भला हो तेरा, गवैयों की सूची में मेरा नाम न हो।

बादशाह—**(हाथ उठाकर)** हैटवाले, अब तुम जा सकते हो।

(हैटवाला दुआएँ देता हुआ जल्दी से अदालत के बाहर जाता है)

मलिका—अदालत के बाहर होते ही सर उड़ा दो उसका।

सिपाही दौड़ते हैं।

बादशाह—दूसरे गवाह को हाजिर करो।

सफेद खरगोश—**(बिगुल बजाते हुए)** दूसरा गवाह, बावर्चिन हाजिर हो।

(बावर्चिन भीड़ से निकलकर आती है। उसके हाथ में लाल मिर्च का डिब्बा है। उसके आते ही मिर्चों की ऐसी धौंस फैलती है कि सभी पशु पक्षी छींकने लगते हैं... एलिस भी।)

बादशाह—बयान दो अपना।

बावर्चिन—मुझे कुछ नहीं कहना।

बादशाह—**(सफेद खरगोश से)** अब क्या करें?

सफेद खरगोश—हुजूर बादशाह सलामत, इससे जिरह की जाये।

बादशाह—ओह, अच्छा। हाँ ये बलाओ, मिठाइयाँ किस चीज से बनती हैं।

बावर्चिन—खास चीज उनमें मिर्च होती है।

(मोटा चूहा एकदम सोते से जाग जाता है।)

मोटा चूहा—नहीं, नहीं। शीरा—गुड़।

मलिका—**(गुस्से से)** फौरन पकड़ लो इस चूहे को। बोरे में बन्द करो इसे। पूँछ काटकर बिल्ली को दे दी जाये। **(मलिका के हुक्म से अदालत में अफरा-तफरी मच जाती है। मोटा चूहा**

अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर छिपता फिरता है, और सिपाही उसके पीछे। आखिरकार मोटा चूहा पकड़ा जाता है।)

मोटा चूहा—हाय-हाय, मैंने तो कुछ नहीं किया। मैं तो सो रहा था। मुझे नहीं मालूम। नींद में बोला था मैं। भैया मिठाई में मिर्च होती ही नहीं... नहीं मिर्च में मिठाई होती है।

सिपाही—अबे चुप! बातें बना रहा है। ले चलो इसको।

मोटा चूहा—मैं एक गरीब चूहा हूँ। भैया सफेद खरगोश, बचाओ, बचाओ।

(सफेद खरगोश अपनी जगह चुपचाप बैठा रहता है। सिपाही मोटे चूहे को घसीटकर ले जाते हैं।)

बादशाह—चलो, किस्सा खत्म हुआ। अब दूसरा गवाह बुलाओ।

(खरगोश तीन बार बिगुल बजाता है। कहता है—खामोश, खामोश, खामोश...)

बादशाह—**(मलिका से)** प्यारी मलिका, अब तुम जिरह करो नये गवाह से। मेरा तो सर फटा जा रहा है। एलिस **(चुपके से)** देखे किसे बुलाते हैं।

खरगोश—एलिस हाजिर हो?

(एलिस एकदम से आश्चर्य में पड़ जाती है।)

एलिस—आयँ मैं... मैं... गवाह। हाँ, यह रही मैं।

दृश्य-13

(एलिस का कद इस बीच काफी बढ़ गया था। जब वह उठी तो उसके कपड़े से टकराकर बहुत से 'पंचों' की मेज कुर्सियाँ गिर पड़ती हैं। और पंच-मेढ़क, तोता, बत्तख, गिलहरी, डोडो, चूहा, सबके सब चें-चें, में, में करते हुए इधर-उधर लुढक जाते हैं। शोर इतना ज्यादा होता है कि कुछ देर के लिए अदालत की कार्यवाही ठप्प हो जाती है।)

बादशाह—एलिस। इस मामले में तुम क्या और कितना जानती हो?

एलिस—कुछ नहीं। जरा सा भी नहीं।

बादशाह—कुछ भी नहीं।

एलिस—रत्ती भर भी नहीं।

बादशाह—**(गम्भीर स्वर)** यह बहुत जरूरी बात है पंचों।

सफेद खरगोश—हुजूर बादशाह सलामत—आपके कहने का मतलब गैरजरूरी है न? गैर जरूरी-जरूरी नहीं।

बादशाह—हाँ। गैरजरूरी, बहुत गैरजरूरी बात है।

दोहराता है—जरूरी—गैर जरूरी, जरूरी?

(एलिस ने देखा कि कुछ पंच जरूरी लिखते हैं–कुछ गैरजरूरी। सोचती है–)

एलिस–ऊँह। इससे क्या होगा? कोई मतलब नहीं।

ग्रिफिन–एलिस! देखो बादशाह अपनी डायरी में कुछ लिख रहे हैं।

बादशाह–खामोश हो जाओ। हमारी दफा 420/42 कहती है कि जिसका सिर पेड़ से टकराता हो मेरा मतलब जिनका सिर छत से टकराता हो–अदालत से बाहर जायें।

सब आपस में कानाफूसी करते हैं–

एलिस एक मील लम्बी–नहीं-हाँ, क्यों नहीं? उससे ज्यादा।

एलिस–ऐ! मैं नहीं हूँ एक मील लम्बी।

बादशाह–**(जोर से)** हो!

एलिस–मैं चाहे जितनी लम्बी होऊँ, यहाँ से नहीं जाऊँगी। और वैसे भी यह नियम आपने अभी-अभी बनाया है।

बादशाह–नहीं! यह हमारी सबसे पुरानी दफा है।

एलिस–तब तो यह पहली दफा होनी चाहिये थी। बादशाह एलिस के तर्क से एकदम भौंचक्का रह जाता है। जल्दी में नोटबुक देता है। काँपती आवाज में कहता है।

बादशाह–पंचो। सोच लो अपना फैसला। सोच-समझकर राय दीजिये।

सफेद खरगोश–नहीं, नहीं। अभी और सबूत पेश होंगे। यह देखिये यह पर्चा अभी पड़ा मिला है।

मलिका–क्या लिखा है इसमें?

सफेद खरगोश–अभी मैंने इसे खोला नहीं है। ऐसा लगता है। मुजरिम का लिखा दस्ती खत है। किसी के नाम...

बादशाह–यह किसी के भी नाम हो सकती है। क्योंकि इस पर किसी का नाम ही नहीं लिखा। **(पर्चा खोलकर देखता है... फिर पढ़ता है। आश्चर्य से कहता है)** अरे हुजूर, यह चिट्ठी नहीं। यह तो कविता है। कविता। एकदम सीधी-सीधी।

तोता पंच–लिखावट पर ध्यान दिया जाय।

सफेद खरगोश–अचरज की बात तो यही है सरकार की लिखावट किसी मुजरिम की नहीं है।

बादशाह–हो सकता है, मुजरिम ने किसी और की लिखावट में लिखा हो।

पंच–हाँ, हाँ। ये हो सकता है। हो न हो यही बात सही है।

पान का गुलाम–हुजूर सरकार। रहम करें। मैं गुलाम हूँ आपका। दया की भीख माँगता हूँ। यह पर्चा मैंने नहीं लिखा। इस पर तो किसी के दस्तखत भी नहीं हैं।

मलिका–बस जुर्म साबित हो गया।

एलिस–क्या साबित हो गया। खाक। कुछ भी साबित नहीं हुआ। किसी को भी यह नहीं मालूम

कि पर्चे में लिखा क्या है।

बादशाह—हाँ, हाँ। पढ़ दो उस पर्चे को।

सफेद खरगोश—हुजूर कहाँ से शुरू करूँ।

बादशाह—शुरू से शुरू करो। और अन्त में रुक जाओ। समझ गये न।

(सफेद खरगोश पढ़ना शुरू करता है)

कविता—

तुमने मेरी चुगली खायी, जाकर करी शिकायत
मुझे तैरना नहीं आता, करता हूँ मैं किफायत
मैंने उसे एक ही दी थी, उसने ले ली दोनों
अब तो बात फैल गयी है, देखना हम फसेंगे दोनों
भला चाहो तो भेद न बताना, अब चुप रहना कुछ न जताना।

बादशाह—यह तो बहुत ही कीमती सबूत है। अच्छा अब जूरी लोग अपनी राय दें।

एलिस—सुनिए, अगर इसमें से कोई भी कविता का मतलब बता दे तो मैं उसे अपनी पूरी गुल्लक ईनाम दे दूँगी।

(पंच स्लेट पर कुछ लिखते हैं शायद एलिस की ही बातें)

बादशाह—पंचों पिछला बयान लिख लिया।

पंच—जी हुजूर। जी हुजूर।

बादशाह—अगर कविता का कोई मतलब नहीं तो चलो छुट्टी हुई। हम क्यों अपना दिमाग खराब करें... मगर रुको, ऐसा नहीं हो सकता। मुझे तो इसमें बहुत महीन अर्थ दिख रहे हैं। लिखता है कि तैर नहीं सकता... पान के गुलाम, तुम तो तैरना नहीं जानते... कि जानते हो?

पान का गुलाम—नहीं, तैरूँगा तो डूब ही जाऊँगा सरकार।

बादशाह—यहाँ तो सभी जान गये। पंचों के बारे में लिखा है। अरे वाह! क्या बात है। सीधे-सीधे तो कहता है—

मैंने उसे एक ही दी थी। देखो किस तरह बँटी मिठाइयाँ। और आगे लिखता है भला चाहो तो भेद न बताना। प्यारी मलिका तुम्हारा तो कभी कोई भेद नहीं रहा न।

मलिका—नहीं। कभी नहीं। **(गुस्से से लाल आँखें हो जाती हैं)**

बादशाह—बस। अब पंच अपना फैसला दें।

मलिका—नहीं, नहीं। पहले सजा, फिर फैसला।

एलिस—कैसी अनोखी वाहियात बात। पहले सजा, फिर फैसला।

मलिका—ऐ लड़की खबरदार, जो फिर बोली!

एलिस—मैं तो बोलूँगी और फिर बोलूँगी!

मलिका—सर उड़ा दो इस लड़की का।

एलिस—ऐ... किससे बात कर रही हो तुम। अरे सबके सब निरे ताश के पत्ते ही तो हो। एक फूँक...

(एलिस की बात सुनते ही सभी पत्ते हवा में उड़ते हुए उसपर बरस पड़ते हैं। मारे गुस्से और डर के एलिस के मुँह से चीख निकल पड़ती है। वह "बचाओ—बचाओ" चीखती हुई अपना बचाव करती है—हाथों से पत्तों को परे हटाती है।... लेकिन....)

जीजी—एलिस, उठो, उठो। देखो, सब सूखे पत्ते मुँह पर गिर रहे हैं। शाम हो गयी....। क्या सोती हो तुम भी। मेरा तो मोजा भी बुनकर खत्म हो गया और यह किताब भी...। तुम हो कि सोये जा रही हो।

एलिस—अरे। हम यहाँ कहाँ है? जीजी...तुम हो...ओह जीजी...बहुत अजीब सपना देखा मैंने । क्या कहूँ—कैसे सुनाऊँ? कहाँ गया मेरा सपना। कौन उड़ाकर ले गया। जीजी वो—वो लम्बी, फिर छोटी, फिर लम्बी और... और...

जीजी—यह क्या कहे जा रही है तू। मेरी तो कुछ समझ नहीं आ रहा। चल एलिस मेरी प्यारी गुड़िया—देख सारी चिड़ियाँ भी अपने घर को जा रही हैं। चलो नहीं तो देर हो जायेगी।

एलिस—हाँ-हाँ चलो। कैसा बढ़िया सपना था। मैं मम्मी को सुनाऊँगी। और अपनी सहेलियों को भी। बहुत-बहुत सुन्दर था मेरा सपना।

(एलिस दौड़ते हुए निकल जाती है... लेकिन उसकी जीजी वहीं बैठी रह जाती है। वह डूबते सूरज को देर तक देखती रहती हैं... एलिस और उसके किस्से के बारे में सोचते... सोचते जैसे वह भी स्वप्न में चली जाती है।)

गीत

जीजी मैंने सपना देखा, सपनों में सपना देखा।
जीजी मैंने सपना देखा, बड़ा अजीब खरगोश देखा।
जीजी मैंने सपना देखा, उड़ रही ऊपर आकाश में।
जीजी मैंने सपना देखा, गुजरी मैं उसके बाग से।
जीजी मैंने सपना देखा, सफेद फूलों को लाल होते देखा।
जीजी मैंने सपना देखा, खुद को ताड़ सा लम्बा देखा।
जीजी मैंने सपना देखा, खुद को खुद से छोटी होते देखा।

जीजी मैंने सपना देखा, भरी अदालत में सबको बेकाबू देखा।
जीजी मैंने सपना देखा, पहले सजा फिर फैसला देखा।
जीजी मैंने सपना देखा...

एलिस मैंने सपना देखा, उछल रही तुम ज्यों खरगोश।
एलिस मैंने सपना देखा, तुम्हें खोजते बच्चे सारे।
एलिस मैंने सपना देखा, खूब वाहवाही लूट रही हो।
एलिस मैंने सपना देखा, बटुआ खाली होते देखा।
एलिस मैंने सपना देखा, सुना रही तुम किस्से अजूबों के
एलिस मैंने सपना देखा, किस्सों के बीच तुम्हें चमकते देखा।
एलिस मैंने सपना देखा, बड़ी सयानी होते तुम्हें देखा।
एलिस मैंने सपना देखा, नानी-परनानी होते तुम्हें देखा।
एलिस मैंने सपना देखा...
एलिस मैंने सपना देखा...

अनुराग ट्रस्ट